२. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण : डॉ. रामविलास शर्मा, २००८,राजकमल प्रकाशन

३. छायावाद: प्रसाद, निराला, महादेवी और पंत : नामवर सिंह , संपादक — ज्ञानेन्द्र कुमार संतोष, २०१८, राजकमल प्रकाशन

४. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास : डॉ बच्चन सिंह,२००८, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

५. हिंदी साहित्य का इतिहास : संपादक — डॉ.नगेन्द्र एवं डॉ .हरदयाल, २००९, मयूर बुक्स प्रकाशन, नई दिल्ली

६. दशद्वार से सोपान तक : हरिवंशराय बच्चन, १९९७, राजपाल एंड संस

७. विकिपीडिया

❑❑❑

40

बलिया बेसिन कुमाऊँ (लघु) हिमालय की परम्परागत कृषि में जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

Impact of Climate Change on Traditional Agriculture in Balia Catchment Area of Kumaun Lesser Himalayas

मोहन सिह सम्मल
शोध छात्र भूगोल,
स०भ०सि०रा०स्ना०महा० रूद्रपुर
कुमाऊँ विश्वद्यिालय नैनीताल, उत्तराखण्ड

****

शोध सांराश Abstract

भौगोलिक संरचना की दृष्टि से पूर्ण रूप में पर्वतीय भू—भाग व विशम भौगोलिक परिस्थितियों से युक्त बलिया प्रदेश जलवायु व मौसमी तत्वों में परिवर्तन से प्रभावित हो रहा है। विस्तृत रूप से किये गये अनुसंधानो, कृषि विशेषज्ञों तथा शोध निष्कर्षों से यह स्पष्ट हो चुका है कि वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से जल संसाधन, पृथ्वी के तापमान में वृद्रि, हिमानियों में संकुचन, मौसम चक्र में परितर्वन, बीमारियॉ, खाद्य उत्पादन विधियों व उत्पादन में कमी, रहन—सहन में परिवर्तन हो रहे है। हिमालयी अध्ययन क्षेत्र बलिया बेसिन के दीर्घकालीन सर्वेक्षण व अध्ययन से यह परिणाम प्राप्त हुआ है कि हिमालयी प्रदेशों की परम्परागत फसल उत्पादन विधियॉ, खाद्य उत्पादकता, खाद्य फसलें, पर्वतीय प्राकृतिक जल स्रोंत्रों, फसल प्रतिरूपों, सिंचाई के साधनों व परम्परागत बीजों में बदलाव हो रहा है, जिससे उत्तराखण्ड के ८६% लगभग पर्वतीय क्षेत्र में आजिविका सम्पन करने वाले समुदाय के लिए संकट उत्पन हो रहा है। स्थानीय सर्वेक्षण एवं समूह वार्ता के अनुसार बेसिन में दो दशकों से लगभग ८० प्रतिशत स्थानीय व्यवसायगत